L.N. MITHILA UNIVERSITY,
DARBHANGA (BIHAR),
B.A. PART-I,
PAPER- I,
Topic:- सीखने में अभिप्रेरणा के महत्व:-

Dr. PRAMOD KR. SAHU
Assit-Professor
Guest-Teacher
Sub. PSYCHOLOGY
V.S.J. college RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar.bg2018@gmail.com.

Q. Explain the role of motivation in learning.

सीखने के क्षेत्र में अनेकों ऐसे प्रयोग पशु पर किये गये जिनसे यह स्पष्ट हो गया है कि जब पशु में कोई अभिप्रेरक होता है तो वह किसी अनुक्रिया को जल्द सीख लेता है। यहाँ पर प्रयोग की चर्चा किया जा रहा है। एक प्रयोग किया जिसमें चूहों का तीन समूह थी और तीनों समूह को एक ही तरह की भूलभुलैया में प्रशिक्षित किया गया। चूहों का पहला समूह ऐसा था जो भूखा (hungry) नहीं था और लक्ष्य बॉक्स (goal box) में पहुँचने के बाद उसे भोजन नहीं दिया जाता था। चूहों का दूसरा समूह जो भूखा था। प्रयोग समाप्त होने के बाद जब वे लक्ष्य बॉक्स में पहुँचते थे तो उन्हें भोजन नहीं दिया जाता था तीसरा भूखा था तथा बॉक्स में पहुँचने के बाद उसे भोजन (Food) भी दिया जाता था। परिणाम में देखा गया कि तीसरा समूह जो भूखा था। जिसे भोजन भी मिलता था। सबसे जल्दी दो समूहों की अपेक्षा भूलभुलैया जल्द सीख लिया गया तथा इस समूह द्वारा सीखने में त्रुटियाँ भी काफी कम की गयी। प्रयोग के इस परिणाम से स्पष्ट हो जाता है। कि भूख अभिप्रेरक (hunger motive) के मौजूद होने से चूहों द्वारा भूलभुलैया की जल्दी सीख लिया जाता है। चाहे पशु जीवन (animal learning) हो या मानव जीवन (human Learning) सभी में अभिप्रेरणा (motivation) का विशेष महत्व होता है। अभिप्रेरणा से सीखने की प्रक्रिया तेज गति से होते देखी गयी है। अभिप्रेरणा को अवस्था मानव या पशु को सही अनुक्रिया करने के लिए एक तरह का आन्तरिक बल (internal force) प्रदान करता है।

मनोवैज्ञानिकों ने पशु जीवन में मूलतः जैविक अभिप्रेरकों (biological motives) जैसे:- भूख, प्यास, काम, नींद आदि प्रणाली को अधिक महत्वपूर्ण बतलाया है। ऐसे ही अभिप्रेरक के कारण वे किसी अनुक्रिया को सीखते है।

Scanned with CamScanner

मानव सीखना (human Learning) में अभिप्रेरक (motive) के स्थान का महत्व है। इसमें यह बात लागू है। कि पशु के समान मनुष्य में जैविक अभिप्रेरक का महत्व कम परन्तु अर्जित अभिप्रेरक का महत्व अधिक होता है। पैसा कमाना समाज में सम्मान पाने की इच्छा, प्रशंसा किये जाने की इच्छा, (rivalry) प्रतिद्वन्द्वी (competition) करना अथवा से आगे पढ़ पाना आदि कुछ महत्वपूर्ण अर्जित अभिप्रेरक के उदाहरण है। सीखने पर इनमें से समय का तो नहीं परन्तु कुछ के प्रभाव का अध्ययन मनोवैज्ञानिकों ने किया है। और बताया है। कि मानव सीखने की प्रक्रिया में इन अभिप्रेरकों की महत्व काफी है। (Role of motivation in human learning) मानव सीखना (human learning) में जैविक अभिप्रेरकों (biological motives) की अपेक्षा अर्जित अभिप्रेरकों के महत्व को मनोवैज्ञानिकों ने अधिक अध्ययन किया है। मनुष्य अर्जित अभिप्रेरक के कारण ही अपने जीवनकाल में भिन्न-भिन्न चीजों को अधिक तेजी से सीखता है। कुछ ऐसे मनोवैज्ञानिकों के अध्ययनों को इस प्रकार वर्णित है।

हरलॉक (Hurlock) ने एक अध्ययन किया जिसमें प्रशंसा तथा फटकार या निन्दा का प्रभाव सीखने की प्रक्रिया पर देखा गया। इस अध्ययन में छात्रों के तीन समूह थे। जिन्हें कुछ अंकों की दो कई कॉलम (column) में लिखने गये थे, जोड़ना भी जोड़ने की कार्य पाँच दिन तक थोड़े-थोड़े समय के लिए किया गया। छात्रों के एक समूह को जोड़ने का कार्य करते समय काफी प्रशंसा की गयी, छात्रों के दूसरे समूह को जोड़ने का कार्य करते समय काफी निन्दा की गयी तथा फटकार भी दिया गया तथा तीसरे समूह को जोड़ने का कार्य करते समय न प्रशंसा की गयी और न ही किसी प्रकार का फटकार दिया गया। परिणाम में देखा गया कि प्रथम दिन से पाँचवें दिन तक तीसरे समूह, जिसे न तो प्रशंसा मिली थी, और न ही फटकार के निष्पादन में कुछ भी वृद्धि नहीं हुई, जिस समूह के कार्य की प्रशंसा की गयी थी, उसके सीखने का औसत प्राप्तांक लगातार बढ़ता गया, जिस समूह के कार्य की निन्दा की गयी थी। उसका औसत सीखने का प्राप्तांक प्रारम्भ में बढ़ा।

Scanned with CamScanner

उसमें तेजी से गिरावट आ जाती। इस प्रयोग के परिणाम से स्पष्ट हो जाता है कि निद्रा से जीवन की प्रक्रिया में प्रारंभ में तेजी आती है। परन्तु बाद में गिरावट आ जाती है। अंतिम परिणाम में यह भी देखा गया कि प्रभावित समूह में लड़कियों की निष्पादन लड़कों की अपेक्षा अधिक था, जबकि निद्रित समूह में लड़कों का निष्पादन लड़कियों की अपेक्षा अधिक था।

अभिप्रेरणा का प्रभाव सीखने पर मनुष्यों एवं पशुओं दोनों के ही संदर्भ में लागू पड़ता है।

अंश विधि से सीखने के लिए पाठ्य-विषय को कई टुकड़ों में बाँट कर सीखा जाता है जैसे- कोई गीत याद करना है उसे दस-दस पंक्ति के तीन खण्डों में बाँट कर पहले खण्ड को याद करने के बाद दूसरे और फिर तीसरे खण्ड को सीखते हैं। इस ही अंश विधि कहा जाता है सभी विषय को सीखने के लिए अंश विधि ज्यादा उपयुक्त होती है इसमें विषय के प्रत्येक टुकड़े को बारी-बारी से सीखा जाता है। और अन्त में पूरे विषय को एक साथ सीख लेते हैं।

पूर्ण विधि से सीखने के लिए पूरे पाठ्य-विषय को एक साथ सीखा जाता है कुछ विषय ऐसे होते हैं, जिनके एक अंश दूसरे अंश से ज्यादा संबंधित होते हैं ऐसी परिस्थिति में पूर्ण विधि से सीखना श्रेष्ठ होता है। इससे विषय के एक अंश से दूसरे अंश के संबंधों का पता चलता है। किसी विषय को पूर्ण विधि से सीखा जाये, या अंश विधि से इस बात को लेकर मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोगात्मक अध्ययन किया है अंश विधि की अपेक्षा पूर्ण विधि ज्यादा उपयोगी है। पेटमैन (Peckstein) का कथन कहना है कि पूर्ण विधि की अपेक्षा अंश विधि ज्यादा उपयुक्त होती है अंश विधि में हमने देखा कि पाठ्य विषय को कई टुकड़ों में बाँट कर सीखते हैं। परन्तु विराम विधि में पाठ्य-विषय को नहीं बल्कि सीखने के लिए निर्धारित समय को ही कई भागों में बाँट कर सीखते हैं। यदि अध्ययन के लिए तीन घंटे की अवधि निर्धारित है। तो इसे आधा-आधा घंटा कर के दो भागों में बाँटा जा सकता है या फिर एक एक घंटे कर के 3 भागों में विभाजित किया जा सकता है। इस विधि के तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। इस विधि से सीखने के लिए समय को टुकड़ों में बाँट कर उसके बीच विश्राम निकालते हैं। और विश्राम के बाद पुनः सीखते हैं।

Scanned with CamScanner

इसे सीखने में विषय की स्थिति निश्चित मजबूत होती है। अविराम विधि में प्रयोग किया विद्यार्थी लगातार पाठ को अभ्यास करता है उस पाठ का अभ्यास तभी तक करता है। जब तक कि उसे पूरी तरह से याद नहीं कर लेता है। इस विधि में सफलता की कोई नहीं जाती है।

पुनर्निरीक्षण एवं आवृत्तिकरण विधि से सीखना।

किसी विषय को सीखने के लिए साधारणतः बार-बार दुहराने की आवश्यकता होती है। एक बार विषय को सीख लेने के बाद उसे दुहराना आवृत्तिकरण कहा जाता है। यह सीखने की एक बहुत अच्छी विधि है। यदि आवृत्तिकरण में कोई त्रुटि भूलता है तो पुनः उसका पुनर्निरीक्षण करता है। जिससे उसे पता चल जाता है कि आवृत्तिकरण के समय वह सीखे गये विषय के किसी अंश को भूल रहा था। जहाँ आवृत्तिकरण में पुनर्निरीक्षण की क्रिया का शामिल रहती है कुछ लोगों ने तो इसे अलग नहीं मानकर आवृत्तिकरण के अंश के रूप में स्वीकार किया है। शिक्षण के लिए पढ़ना और आवृत्तिकरण दोनों का सहारा लिया जाता तो इससे शिक्षण पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि वास्तविक स्थिति में सामान्यतः पीछे से भी अलग-अलग सूचनाओं को हम एक साथ संचित किया जा सकता है। चुकिंग की प्रक्रिया द्वारा एक समय में नौ से सात अधिक अलग-अलग सूचनाओं को हम संचित किया जा सकता है। चुकिंग (chunking) ऐसी प्रक्रिया है जिसमें छोटी-छोटी सूचनाओं को बड़ी इकाइयों में समूहीकरण करके उसे याद करते हैं। इन इकाइयों को चुंकि प्रत्याहरण कहा जाता है जिसमें वैसी सूचनाएँ होती हैं जो आपस में संबंधित होते हैं। तथा जिन्हें अर्थपूर्ण इकाई में एक साथ समूहीकृत किया जा सकता है अक्षरों की सूचि को एक वाटपद कर सूचनाएँ जाता है FACBICIAIBM और उसे याद करने के लिए कही जाती है बहुत उम्मीद यह है कि लोग इसमें सफल नहीं होंगे। लघुकालीन स्मृति की अवधि अधिक से अधिक 20-30 सेकेंड तक होती पायी गयी है।

Dr. Premchandra Sahu
DATE- 25/04/2020

Scanned with CamScanner